RNI NO. MPHIN/2022/85285
डाक पंजी. क्र.- MP/KDW/93/2023-24
Email id: haldharkisankgn@gmail.com

राष्ट्रीय मासिक समाचार पत्र

हलधर किसान

वर्ष 03 अंक 03 | मई 2024 | पृष्ठ- 8 | मूल्य- 5.00 रुपए

एमएसपी पर गेहूं बेचने में रुचि नही दिखा रहे किसान

गेहूं की सरकारी खरीद 11 प्रतिशत कम अब तक 196 लाख टन गेहूं खरीदा

नई दिल्ली। समर्थन मूल्य पर सरकारी गेहूं खरीदी में किसानों की रूचि नजर नही आ रही है, संभवतः यही कारण है कि गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष सरकारी खरीदी का स्तर 11 फीसदी कम हुआ है। सरकार ने वित्तीय वर्ष 2024.25 में अब तक 196 लाख टन से अधिक गेहूं खरीदा है, जबकि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियमसमेत सभी कल्याणकारी योजनाओं के लिए सालाना जरूरत 186 लाख टन है।

खाद्यान्न की खरीद और वितरण के लिए सरकार की नोडल एजेंसी भारतीय खाद्य निगमअब बफर स्टॉक बढ़ाने के लिए 2024.25 सत्र में 310.320 लाख

टन गेहूं खरीद के अपने लक्ष्य को पूरा करने के प्रयास कर रही है। जरूरत पड़ने पर खुदरा कीमतों को नियंत्रित करने के लिए खुले बाजार में हस्तक्षेप करने के लिए इस स्टॉक का इस्तेमाल किया जाएगा। हालांकि, रबी सत्र की प्रमुख फसल गेहूं की खरीद पिछले साल की समान अवधि के 219.5 लाख टन से अब तक 11 प्रतिशत कम हुई है। इसका मुख्य कारण मध्य प्रदेश और पंजाब में कम खरीद का होना है।

चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक अशोक के मीणा ने कहा कि हम अपनी अनुमानित खरीद लक्ष्य को हासिल करने की राह पर हैं क्योंकि पंजाब और हरियाणा में गेहूं की आवक बहुत अच्छी है। उन्होंने कहा कि अकेले इन दोनों राज्यों से लगभग 200 लाख टन गेहूं की खरीद करेगा।केंद्र ने मार्केटिंग ईयर 2023.24 (अप्रैल.मार्च) में 261.97 लाख टन गेहूं की खरीद की थी। अधिकांश खरीद अप्रैल. मई के दौरान की जाती है।

केंद्रिय कृषि मंत्रालय के अनुमानों के मुताबिक, गेहूं का उत्पादन फसल वर्ष 2023.24 में 1,120.19 लाख टन होगा, जबकि पिछले वर्ष में यह 1,105.54 लाख टन था। कुछ राज्यों में उम्मीद से अधिक पैदावार होने पर उत्पादन लगभग 1,150 लाख (115 मिलियन) टन तक भी पहुंच सकता है के मुताबिक, एफसीआई ने विभिन्न राज्यों के करीब 16 लाख किसानों से 2,275 रुपये प्रति क्विंटल के न्यूनतम समर्थन मूल्य पर 45,000 करोड़ रुपये का गेहूं खरीदा है।पंजाब और हरियाणा में इस समय गेहूं की फसल की आवक अच्छी है। पंजाब से 130 लाख टन और हरियाणा से 70 लाख टन की खरीद की उम्मीद है।

गेहूं खरीदी में मध्य प्रदेश काफी पिछड़ गया है, यहां गुणवत्ता मानदंडों में ढील दी गई है। इसके बाद भी मध्य प्रदेश में अब तक गेहूं की खरीद 34.66 लाख टन ही हुई है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि में 55.59 लाख टन थी, जबकि यहां बोनस राशि बढ़ाई गई है। चावल के मामले में अधिकारी ने कहा कि स्थिति बहुत आरामदायक है। सभी कल्याणकारी योजनाओं के लिए 400 लाख टन चावल की वार्षिक जरूरत के मुकाबले मार्केटिंग ईयर ;अक्टूबर.सितंबर में 540 लाख टन की खरीद की उम्मीद है। चावल के मामले में हमारे पास एक साल का अतिरिक्त स्टॉक है।

45000 करोड़ के मसाला कारोबार पर संकट विदेशों में जांच की आंच में फंसा देश का मसाला

हलधर किसान। भारतीय मसाले देश और दुनिया सभी जगह अपनी खुशबू और रंग के लिए मशहूर हैं, लेकिन इन दिनों यह मसाले सवालों के घेरे में आ गए है। देश से हांगकांग और सिंगापुर पहुंचे कुछ नामी ब्रांडस मसालों में खतरनाक केमिकल मिलने के बाद दोनों ही ब्रांड्स के मसालों को वहां बैन कर दिया। इसके बाद से मसाला कारोबार पर संकट के बादल गहराने लगे है। भारतीय मसालों का बहुत बड़ा बाजार है, जो कई विश्व के देशों में फैला है।

आर्थिक शोध संस्थान वैश्विक व्यापार अनुसंधान पहल ने इस बारे में रिपोर्ट पेश की है, जिसके अनुसार कई देशों में भारतीय मसालों की जांच शुरू हो गई है। यदि ये जांच ऐसे ही जारी रहती है और चीन या यूरोप तक भी पहुँचती है तो मामला और ज्यादा गंभीर हो जाएगा। भारत के मसाला कारोबार का विदेशी बाजार में भी बड़ा दांव लगा हुआ है। यदि सभी देशों में इनकी जांच शुरू हुई तो 45 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा का नुकसान हो सकता है। विदेशों की सरकारों द्वारा की जाने वाली कार्रवाई के कारण भारत के मसाला उद्योग को लगभग 50 फीसदी नुकसान उठाना पड़ सकता है।

अन्य देशों में भी होने लगी जांच

भारत की अच्छे मसालों के लिए पहचान है। यहां से कई देशों में मसालों की पूर्ति की जाती है। लेकिन इस बार मसालों को लेकर देश की किरकिरी हुई है, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया ने भी इन मसालों की जांच करनी शुरू कर दी है। जीटीआरआई ने भी इस मामले को जल्दी निपटाने की बात कही है। क्योंकि इसमें न केवल प्रसिद्ध मसाला उद्योग बल्कि भारत की भी प्रतिष्ठा दांव पर लगी है।

हो सकता है भारी नुकसान

भारत को अपने मसाला एक्सपोर्ट के संबंध में क्वालिटी संबंधी मामले आने के बाद देश की काफी किरकिरी हुई है। सिंगापुर और हॉन्गकॉन्ग के बाद ऑस्ट्रेलिया ने भी मसालों की जांच शुरू कर दी है। वहीं दूसरी ओर अमेरिका ने भी इसे वॉचलिस्ट में डाल दिया है। अगर इन देशों में कार्रवाई होती है तो देश के मसाला एक्सपोर्ट को मोटा नुकसान हो सकता है। आर्थिक शोध संस्थान ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव यानी जीटीआरआई ने कहा कि हर दिन नए देश भारतीय मसालों की क्वालिटी को लेकर चिंता जाहिर कर रहे हैं। जीटीआरआई कहा कि इस मुद्दे पर तत्काल ध्यान देने और भारत के प्रसिद्ध मसाला उद्योग की प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए कार्रवाई की आवश्यकता है।

चार देशों में 5800 करोड़ दांव पर

रिपोर्ट में कहा गया है कि दुनिया के जिन 4 देशों में इस तरह के मामले निकलकर सामने आए हैं, उन महत्वपूर्ण बाजारों में 70 करोड़ डॉलर यानी 5800 करोड़ का निर्यात दांव पर लगा है। कई देशों में रेगुलेटरी कार्रवाई से संभावित रूप से मसाला निर्यात में आधे का नुकसान हो सकता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत को क्वालिटी संबंधी मुद्दों को जल्द और पारदर्शिता के साथ हल करने की आवश्यकता है। रिपोर्ट में साफ कहा गया है कि भारतीय मसालों में ग्लोबल विश्वास को फिर से स्थापित करने के लिए त्वरित जांच और निष्कर्षों का पब्लिश होना काफी जरूरी है। गलती करने वाली फर्मों पर तत्काल कार्रवाई होना जरूरी है।

गर्मी के मौसम में किसान करें खेतों की गहरी जुताई, मिलेगा यह लाभ

हलधर किसान

ŁÇ ØşUæU— देशभर में रबी फसलों की कटाई का काम लगभग पूरा हो गया है, ऐसे में अब खरीफफसलों की बुआई तक खेत खाली रहेंगे। इस बीच किसान भाई कई ऐसे काम कर सकते हैं, जिससे अगली यानि की खरीफ फसलों से अधिक उत्पादन लिया जा सके। इसमें खेतों की मिट्टी की जांच, मृदा सौरीकरण, गहरी जुताई आदि शामिल है। इसमें किसान खेत की जुताई का काम तो फसलों की बुआई से पहले करते ही हैं लेकिन किसान गर्मी में यह काम करके अधिक फायदा ले सकते हैं। फसलों की कटाई मार्च और अप्रैल माह तक किसानों को लगभग मुक्त कर देती है। इस समय खेत में इतनी नमी होती है कि गहरी जुताई आसानी से की जा सकती है। यह सबसे अच्छा समय है। गर्मियों में इस गहरी जुताई का महत्व और लाभ ऐसे मिल सकता है।

. जल संरक्षण:

अधिकांश किसान एक निश्चित गहराई (6.7 इंच) पर जुताई करते हैं, जिससे पानी का प्रवाह अधिक होता है। गर्मियों में गहरी जुताई (जो लगभग 9 से 12 इंच गहरी होती है) में यह सख्त परत टूट जाती है। परिणामस्वरूप, बारिश के मौसम में ऐसे खेतों की जल धारण क्षमता बढ़ जाती है। इस तरह जल संरक्षण को प्रत्यक्ष बढ़ावा मिलता है।

खरपतवार नियंत्रण:

खरपतवार लगभग 20.60 प्रतिशत तक फसल उत्पादन कम कर सकते हैं। कुछ खरपतवारों जैसे कि कंस, मोथा, दूध आदि की जड़ें गहरी रहती हैं। उन्हें नियंत्रित करने का एक प्रभावी तरीका गर्मियों की गहरी जुताई है, जिसके कारण उक्त खरपतवारों, प्रकंदों की जड़ें ऊपरी सतह पर आ जाती हैं, जो बाद में सूख जाती हैं और चिलचिलाती गर्मी में नष्ट हो जाती हैं।

कीट और रोग नियंत्रण: .

फसल रोगों के रोगजनक एवं कीटों के अंडे व शंखी मिट्टी में रहते हैं। गहरी जुताई के कारण वे या तो ऊपर आ जाते हैं या गहराई में दबकर मर जाते हैं। ऊपर आने परए वे तेज गर्मी के संपर्क में आने से नष्ट हो जाते हैं। इस तरह से कीटों और रोगों पर नियंत्रण संभव हो जाता है। मिट्टी की उर्वरता में वृद्धिरू. गहरी जुताई वाले खेत पहली बारिश के मौसम में सभी पानी को अवशोषित करते हैं, जिससे इन खेतों में अधिकतम वायुमंडलीय नाइट्रोजन की हानि होती है। इसके साथ ही गहरी जुताई वाले खेतों में मिट्टी का कटाव भी कम होता है। परिणामस्वरूप, पोषक तत्वों का प्रवाह भी रुक जाता है। उपरोक्त बिंदुओं से यह स्पष्ट है कि हमारे किसान भाइयों को इस गहरी जुताई से कई लाभ मिल सकते हैं। शायद यही वजह है कि मध्य प्रदेश सरकार हलधर गर्मियों में जुताई के लिए किसान भाइयों को अनुदान दे रही है, जिसे अपनाकर किसान भाई ज्यादा से ज्यादा लाभान्वित हों। .पुरे खेत में भूमि के प्रकार के अनुसार एक समान गहरी जुताई करनी चाहिए।

. गहरी जुताई तीन वर्ष में एक बार जरुर करें

फसलों में लगने वाले कीट.व्याधियों की रोकथाम की दृष्टि से बुआई के समय की गई जुताई ज्यादा फायदेमंद नहीं रहती जबकि गर्मी में की गई गहरी जुताई करके खेत को खाली छोड़ देने से ज्यादा लाभ मिलता है। गर्मी में गहरी जुताई करने से भूमि का तापमान बढ़ जाता है जिससे कीटों के अंडे, शंकु और लट खत्म हो जाती है और इनका प्रकोप खरीफ फसलों पर नहीं पड़ता। किसानों को फसलों की अच्छी उपज के लिए रबी की फसल कटाई के तुरंत बाद गहरी जुताई करके गर्मी में खाली छोड़ देना चाहिए। क्योंकि ऐसा करने से कीटों के अंडे, प्यूपा और लार्वा खत्म होने से खरीफ के मौसम में धान, बाजरा, दलहन और सब्जियों में लगने वाले कीट रोगों का प्रकोप कम हो जाता है। अतः गर्मी में गहरी जुताई से कीड़े.बीमारियो से एक सीमा तक छुटकारा पाया जा सकता है। इसके अलावा सूर्य की तेज किरणों के भूमि के अंदर प्रवेश करने से फसलों में लगने वाले उखटा, जड़ गलन आदि रोगों के रोगाणु एवं सब्जियों की जड़ों में गाँठ बनाने वाले सूत्रकृमि भी नष्ट हो जाती है।

.खेत की मिट्टी में ढेले बन जाने से वर्षा जल सोखने की क्षमता बढ़ जाती है। जिससे खेतों में ज्यादा समय तक नमी बनी रहती है।

.गहरी जुताई से दूब, कांस, मौथा, वायुसूरी आदि जटिल खरपतावारों से भी मुक्ति पाई जा सकती है।

.गर्मी की जुताई से गोबर की खाद और खेत में उपलब्ध अन्य कार्बनिक पदार्थ भूमि में भली.भांति मिल जाते हैं। जिससे पोषक तत्व शीघ्र ही फसलों को उपलब्ध हो जाते हैं।

.किसान कब एवं कैसे करें खेतों की जुताई

गहरी जुताई में सावधानियां .

पूरे खेतों की एक समान जुताई करनी चाहिए तथा बिना जुताई वाला स्थान नहीं रहना चाहिए।

.फसल के अवशेष तथा अनावश्यक उगे पौधों को खेत में दबा देना चाहिए।

.गहरी जुताई के समय ध्यान रखें कि कम से कम मृत कूढ़ (नाली) खेत में बने, इसके निदान के लिए पलटीफार प्लाउ का उपयोग किया जा सकता है।

.गहरी जुताई के समय कई स्थानों पर मिट्टी एकत्र हो जाती हैं, उसके नीचे बिना जुता खेत रह जाता है, उसकी भी जुताई करनी चाहिए।

सावधानियां

किसानों को ज्यादा रेतीलें इलाक़ों में गर्मी की जुताई नहीं करनी चाहिए। किसान जुताई करते समय इस बात का ध्यान रखें कि जुताई के समय मिट्टी के बड़े.बड़े ढेले रहे तथा मिट्टी भुरभुरी ना हो पाए, क्योंकि गर्मी में हवा द्वारा मिट्टी के कटाव की समस्या हो सकती है।

गहरी जुताई करने वाले यंत्र

एमबी प्लाऊ, पशु चालित उन्नत बक्खर, सब.सॉयलर,कल्टीवेटर,डिस्क प्लाऊ।

किसान गर्मी के सीजन में खेतों की जुताई रबी फसलों की कटाई के तुरंत बाद कर दें, क्योंकि फसल कटने के बाद भी मिट्टी में थोड़ी नमी रहती है जिससे जुताई में आसानी होती है। गर्मी की जुताई 20 से 30 सेंटीमीटर गहराई वाले किसी भी मिट्टी पलटने वाले हल से करनी चाहिए। यदि खेत का ढलान पूर्व से पश्चिम की तरफ हो तो जुताई उत्तर से दक्षिण की ओर यानी की ढलान काटते हुए करनी चाहिए। जिससे वर्षा का पानी एवं मिट्टी ना बह पाये। ट्रैक्टर से चलने वाले तवेदार मोल्ड बोर्ड हल भी गर्मी की जुताई के लिए उपयुक्त है।

ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती, बढ़िया उत्पादन के लिए बीजोपचार के बाद ही करें बुवाई

हलधर किसान। किसान इस समय गर्मी यानी जायद में बोई जाने वाली मूंग की बुआई कर सकते हैं। मूंग जैसी दलहनी फसलों की बुवाई से यह फायदा होता है कि यह खेत में नाइट्रोजन की मात्रा को बढ़ाती हैं, जिससे दूसरी फसलों से भी बढ़िया उत्पादन मिलता है। मूंग की फसल के लिए ज्यादा बारिश नुकसानदायक होती है, ऐसे क्षेत्र जहां पर 60.75 सेमी तक वार्षिक बारिश होती है, मूंग की खेती वहां के लिए उपयुक्त होती है। मूंग की फसल के लिए गर्म जलवायु की जरूरत पड़ती है।

खेत की पहली जुताई हैरो या मिट्टी पलटने वाले रिजर हल से करनी चाहिए। इसके बाद दो.तीन जुताई कल्टीवेटर से करके खेत को अच्छी तरह भुरभरा बना लेना चहिए। आखिरी जुताई में लेवलर लगाना अति जरूरी है, इससे खेत में नमी लम्बे समय तक संरक्षित रहती है। दीमक से ग्रसित भूमि को फसल की सुरक्षा के लिए क्यूनालफास 1.5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से अंतिम जुताई से पहले खेत में बिखेर दें और उसके बाद जुताई कर उसे मिट्टी में मिला दें।

मूंग की इन किस्मों की करें बुवाई

पूसा वैसाखी . फसल अवधि 60.70 दिन, पौधे अर्ध फैले वाले, फलियां लम्बी,, उपज 8.10 क्विंटल/ हैक्टेयर मोहिनी . फसल अवधि 70.75 दिन, उपज 10.12 क्विंटल/हैक्टेयर पीला मोजैक वायरस व सर्कोस्पोरा लीफ स्पोट रोग के प्रति सहनशील। पन्त मूंग 1 :- फसल अवधि 75 दिन (खरीफ) तथा 65 (जायद) दिन, उपज क्षमता 10.12 क्विंटल/ हैक्टेयर एमएल 1:- फसल अवधि 90 दिन, बीज छोटा व हरे रंग का ए उपज क्षमता 8.12 क्विंटल/ हैक्टेयर। **वर्षा** . यह अगेती किस्म है, उपज क्षमता 10 क्विंटल/ हैक्टेयर **सुनैना** . फसल अवधि 60 दिन, उपज क्षमता 12.15 क्विंटल/ हैक्टेयर ग्रीष्म मौसम के लिए उपयुक्त. **जवाहर 45:-** इस किस्म को हाइब्रिड 45 भी कहा जाता है, फसल 75.85 दिन अवधि उपज क्षमता 10.13 क्विंटल/ हैक्टेय, खरीफ के मौसम के लिए उपयुक्त. कृष्ण 11:-. अगेती किस्म फसल अवधि 65.70 दिन, उपज क्षमता 10.12 क्विंटल/ हैक्टेयर. **पन्त मूंग 3:-** फसल अवधि 60.70 दिन, ग्रीष्म ऋतू में खेती के लिए उपयुक्त, पीला मोजैक वायरस तथा पाउडरी मिल्ड्यू रोधक। **अमृत** . फ सल आधी 90 दिन यह खरीफ मौसम के लिए उपयुक्त की है, पीला मोजैक वायरस रोग के प्रति सहनशील, उपज क्षमता 10.12 क्विंटल/ हैक्टर।

बढ़ती जनसंख्या से प्रकृति को लेकर हम कितने सतर्क?

प्रकृति को लेकर अब खुद से पेड़.पौधे लगाने के लिए सजग होने की महती आवश्यकता हो गई है। बदलते प्रकृति संतुलन को देखते हुए पेड़.पौधों को खुद ही संरक्षित करना होगा। पेड़ पौधों की कमी व बढ़ती जनसंख्या की वजह से जिस माह में जिस ऋतु को आना चाहिए। वह सही समय में नहीं आती, जिसकी वजह से पूरा का पूरा मौसम चक्र बदल गया है इस बार गर्मी ने जो रंग दिखाया उससे वास्तव में सभी के चेहरे के रंग उड़ गए। सूर्य की तपिश में मानों हर जीव झुलस रहे हों। नदियों का पानी सूखने की कगार पर आ गया। यहां तक कि कई ग्रामीण क्षेत्रों में चापाकल सूख गए, पोखर, तलाब सूख गए, कुंआ का अस्तित्व तो विलुप्त ही है। भारत के कई ऐसे क्षेत्र हैं, जहां कभी पानी की किल्लत होती ही नहीं थी। इस बार वो भी क्षेत्र बिन पानी सून है। सूर्य की तपिश ऐसी की मानों जला ही दें और हुआ भी यही की हीटवेव के कारण कितनों की जानें चली गई। अधिकांश जगहों पर तापमान 45 से 50 डिग्री सेल्सियस रहा है, ये सामान्य सी घटना नहीं है। आखिर ऐसा क्यों हो रहा है? ये सोचने का विषय है। आने वाले 10 साल में स्थिति ऐसी ही रही तो ये कहना गलत नहीं होगा की आसमान से आग बरसेगी और ये सिलसिला बढ़ता ही रहा तो आने वाले 40.50 साल में पूरा देश पानी की समस्या से जूझ रहा होगा और तापमान 100 डिग्री सेल्सियस के आसपास पहुंच चुका होगा। तब की स्थिति की कल्पना ही भयभीत करती है। हम पर्यावरण संरक्षण को भूलते जा रहे। आने वाले समय में पेड़ों की अंधाधुंध कटाई पर रोक लगे ऐसा मुमकिन नहीं लगता। नदियां प्रदूषण मुक्त हो जाएगी ऐसी बातें करना ही मूर्खतापूर्ण है। हम भौतिक सुखों में प्रकृति को भूलते जा रहे है। पर्यावरण संरक्षण की बातें बस पर्यावरण दिवस पर ही सुनने को मिलती है। सच्चाई तो ये है कि हमारे पास इन विषयों पर सोचने के लिए समय ही नहीं है। कम से कम आने वाले वक्त के लिए तो अभी से कमर कस ही लेनी चाहिए कि अन्न.जल के अभाव में मरना है। अगर हम बच भी गए तो आने वाली पीढ़ी इसका दंश झेलेगी ही झेलेगी। साल 2018 में नीति आयोग द्वारा किए गए एक अध्ययन में 122 देशों के जल संकट की सूची में भारत रहा है। 2070 तक भारत की आधी आबादी सूर्य की तपिश और पानी के अभाव में अपना जीवन यापन कर रहा होगा। कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि बढ़ती आबादी की जरूरतों और सिंचाई के लिए भारी मात्रा में जमीन से पानी निकाला जा रहा हैण् इससे पृथ्वी की धुरी प्रभावित हुई है। साथ ही इसके घूमने का संतुलन भी बिगड़ा है। भू. भौतिकीविदों का मानना है कि पृथ्वी की धुरी में बदलाव और भूजल दोहन के बीच मजबूत संबंध सामने आना, वैज्ञानिकों के लिए भी एक बड़ा आश्चर्य है। जल विशेषज्ञों ने लंबे समय से भूजल के अत्यधिक उपयोग के परिणामों के बारे में पहले ही चेतावनी दी थी। सूखाग्रस्त क्षेत्रों में भूजल तेजी से महत्वपूर्ण संसाधन बनता जा रहा है। दरअसल जमीन से पानी तो निकाला जा रहा है, लेकिन इसकी भरपाई नहीं हो पा रही है। इससे जमीन अपने स्थान से खिसक सकती है, जिससे घरों और बुनियादी ढांचे को नुकसान पहुंच सकता है। हमारी बड़ी लापरवाही से भूजल के स्रोत हमेशा के लिए खत्म हो सकते हैं। अब समय आ चुका है कि हम सभी पर्यावरण के प्रति जितना सतर्क हो जाएं, उतना बेहतर। साथ ही साथ पर्यावरण के लिए लोगों को भी जागरुक होना पड़ेगा। सरकार के साथ समाज को भी अधिक से अधिक पेड़ पौधे लगाने चाहिए। साथ ही साथ खुद के लगाए गए पौधों के संरक्षण के लिए खुद से भी जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

100 साल के बाद अक्षय तृतीया पर बन रहा गजकेसरी योग, 10 मई को तीन राशियों की बदलेगी किस्तम

डॉ. सुदीप जैन
ज्योतिषाचार्य, अमजेर

हलधर किसान, ज्योतिष।अक्षय तृतीया विवाह और मांगलिक कार्यों के लिए अबूझ मुहूर्त माना जाता है। वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि का दिन दीपावली और धनतेरस के समान फलदायी होता है, क्योंकि इस रोज अक्षत तृतीया का पर्व मनाया जाता है। मान्यता है कि इस दिन बिना मुहुर्त निकाले शुभ कार्य, विवाह करना, सोना.चांदी खरीदना जैसे काम किए जा सकते हैं। इस बार अक्षय तृतीया पर शुक्र अस्त होने के कारण विवाह नहीं हो पाएंगे। अक्षय तृतीया के दिन मांगलिक कार्यों की शुरुआत करने से शुभ फलों की प्राप्ति होती है और धन की देवी लक्ष्मी की कृपा हमेशा बनी रहती है। इस साल अक्षय तृतीया के दिन कई शुभ संयोग बन रहे हैं। यह शुभ योग कई राशियों के लिए बहुत शुभ रहने वाले हैं। तो आइए जानते हैं कि अक्षय तृतीया पर बन रहे शुभ संयोगों का किन.किन राशियों को मिलेगा लाभ।

ज्योतिषाचार्य डॉ. सुदीप जैन के अनुसार, अक्षय तृतीया के दिन 100 साल के बाद चंद्रमा और गुरु की ऐसी युति होगी कि गजकेसरी योग बना जाएगा। खास बात ये है कि ये राजयोग 10 मई 2024 को बन रहा है, शुभ और मंगलकारी सुकर्मा, गजकेसरी और शश योग का निर्माण हो रहा है। इसके अलावा भी इस दिन कई अन्य योग भी बन रहे हैं। सुकर्मा योग की शुरुआत दोपहर 12 बजकर 08 मिनट से हो रही है और इसका समापन सुबह 10 बजकर 3 मिनट पर होगा। इस रोज रवि योग भी पूरे दिन बना रहेगा। रवि और सुकर्मा योग में सोना खरीदना बहुत ही शुभ माना जाता है। अक्षय तृतीया पर रोहिणी और मृगशिरा नक्षत्र भी बन रहे हैं, जो पूजा के लिए बहुत शुभ होते हैं। इन शुभ योगों में सोना खरीदने से घर में सुख.समृद्धि बनी रहती है। साथ ही लक्ष्मी की विशेष कृपा बनी रहती है। अक्षय तृतीया के दिन भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा की जाती है। इस दिन पूजा का शुभ समय सुबह 05 बजकर 33 मिनट से लेकर दोपहर 12 बजकर 18 मिनट तक रहेगा।

मेष राशि-मेष राशि के जातकों के लिए अक्षय तृतीया का दिन काफी शुभ रहने वाला है। नौकरीपेशा लोगों को प्रमोशन मिलने की संभावना है। जो लोग प्रॉपर्टी खरीदने के बारे में सोच रहे थे, उनका यह सपना पूरा होगा। लव लाइफ में रोमांस की गर्माहट बनी रहेगी। इस राशि के छात्र अपने कॅरियर को लेकर अहम फैसला लेंगे। सेहत अच्छी रहेगी।

वृषभ राशि- अक्षय तृतीया का दिन वृषभ राशि के जातकों के लिए वरदान की तरह साबित होने वाला है। परिवार के साथ किसी दोस्त की शादी में जाएंगे। कार्यक्षेत्र में सहकर्मियों के साथ अच्छा तालमेल बना रहेगा। जीवनसाथी के साथ अकेले में समय व्यतीत करने का मौका मिलेगा। इस राशि के छात्रों को परीक्षा में मनचाही सफलता मिलेगी।

मीन राशि-मीन राशि के जातकों के लिए अक्षय तृतीया का दिन बहुत सकारात्मक परिणाम लेकर आने वाला है। ऑफिस में बॉस आपके काम की तारीफ करेंगे। कोर्ट.कचहरी के मामले में फैसला आपके पक्ष में रहने से राहत की सांस लेंगे। संतान की तरफ से कोई शुभ समाचार सुनने को मिल सकता है। सेहत को लेकर सावधान रहने की आवश्यकता है।

वर्ग पहेली-4

बाएँ से दाएँ

1. कुटुंब में श्रेष्ठ (5)
5. हाथी पालने व चलाने वाला (4)
6. निवार की बड़ी मजबूत खाट या चारपाई (3)
8. मार डालना, खत्म करना (3)
10. देव सलिला, एक पवित्र नदी (2)
11. युद्ध (3)
12. फल युक्त, वटवृक्ष (2)
13. सरल, जो जटिल न हो, सुगम (3)
14. पृथक, परे (3)
15. बातें करना (4)
16. हवा से ढंका हुआ प्राकृतिक वातावरण (5)

ऊपर से नीचे

2. जमीनी हिस्सा, थल (3)
3. आघात (3)
4. जागरण (4)
5. कौरव और पांडवों के मध्य हुआ युद्ध (5)
7. गणेश (4)
9. विचलित होना, छटपटाना (5)
10. गंगा का पानी (4)
12. जबरदस्ती (4)
13. पूज्य, आराधना के योग्य (3)
14. कमी (3)

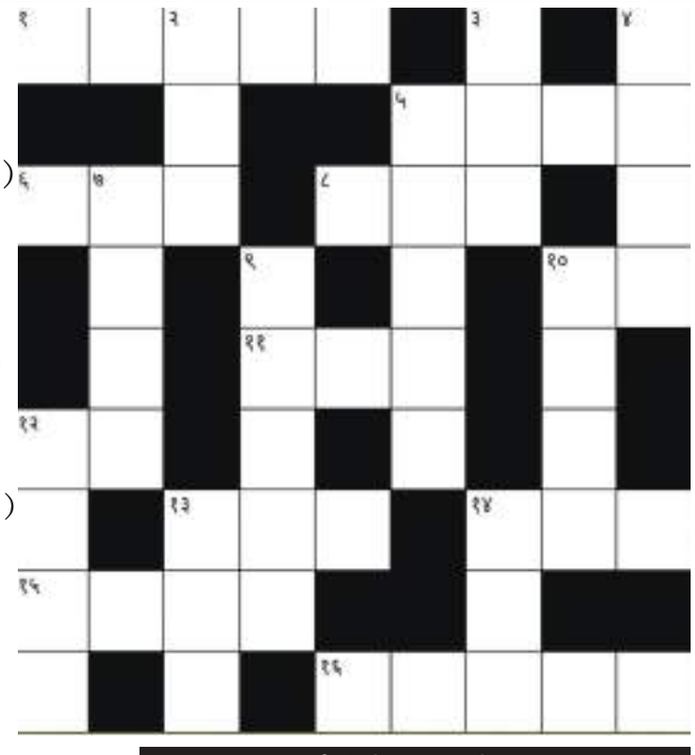

वर्ग पहेली 3 का सही उत्तर

क	र	म	क	ल्ला	■	ख	■	अ
■	■	ल्ला	■	■	स	जा	ब	ट
स	ला	ह	■	ज	मा	ना	■	क
■	ज	■	अ	■	लो	■	शू	ल
■	बा	■	ब	रं	च	■	पै	■
क	ब	■	लो	■	ना	■	ण	■
चो	■	कं	क	ण	■	दि	खा	बा
ट	ना	ट	न	■	■	नों	■	■
ना	■	क	■	ती	र	क	मा	न

अमेरिकन कपास नरमा की इन किस्मों की बुआई से किसान ले सकते है अच्छी पैदावार

हलधर किसान

नई दिल्ली। कपास दुनिया की महत्वपूर्ण फसलों में गिनी जाती है। अगर क्षेत्रफल के लिहाज से बात करें तो भारत में कपास की खेती सबसे अधिक होती है। अपने यहां किसान बीटी कॉटन की खेती बड़े पैमाने पर करते हैं। कुल कपास के क्षेत्रफल में 88 फीसदी रकबे में बीटी कॉटन की ही खेती होती है और किसानों को अच्छा उत्पादन मिलता है। किसान आगामी खरीफ सीजन में अधिक से अधिक रकबे में कपास की खेती की योजना बना रहे हैं।

कपास की बुआई का समय शुरू हो गया है, ऐसे में किसान कम लागत में इसकी अच्छी पैदावार ले सकें इसके लिए कृषि विभाग और कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा लगातार किसान हित में सलाह जारी की जा रही है, साथ ही अलग.अलग पंचायतों में किसानों को प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। किसानों को कपास की बुआई का काम 20 मई तक पूरा करने की सलाह दी जा रही है ताकि फसल पर गुलाबी सुंडी का प्रकोप ना हो।

इस कड़ी में राजस्थान के कृषि विभाग द्वारा किसानों को कपास की अनुशंसित उन्नत किस्में लगाने की सलाह दी गई है। साथ ही बीजों की बुआई, बीज की मात्रा आदि के बारे में भी किसानों को जानकारी दी जा रही है। इसमें अमेरिकन कपास या नरमा की खेती करने वाले किसानों को इसकी बुआई का काम शुरू करने की भी सलाह दी गई है। कृषि विभाग की ओर से इस वर्ष किसानों को नरमा की उन्नत किस्में जैसे आरएस 2814, आरएस 2818, आरएस 2827, बीकानेरी नरमा, आरएसटी 9, आरएस 875, आरएस 81, आरएस 2013 लगाने की सलाह दी गई है। किसान इन किस्मों की खेती के लिए 4 किलो प्रति बीघा की दर से बीज की बुआई करें। वहीं बुआई के दौरान पंक्ति से पंक्ति की दूरी 67.50 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी लगभग 30 सेंटीमीटर रखें। वैसे तो नरमा की बुआई के लिए उपयुक्त समय बुआई मई माह के अंत तक भी की जा सकती है।

खरपतवार नियंत्रण कैसे करें

किसान पहली सिंचाई के बाद बतर आने पर कसिये से निराई गुड़ाई का काम करें। इसके बाद आवश्यकतानुसार एक या दो बार त्रिफाली चलायें। रसायनों द्वारा खरपतवार नियंत्रण के लिए पेंडामेथालिन ; 30 ईसी के 833 मिली या ट्राईफ्लूरालीन 48 ईसी 780 मिली को 150 लीटर पानी में घोलकर प्रति बीघा की दर से फ़्लेट फेन नोजल से उपचार करने से नरमें की फसल प्रारंभिक अवस्था में खरपतवार विहीन रहती है। इनका प्रयोग बिजाई से पहले मिट्टी पर छिड़काव अच्छे से मिलाकर करें। गुलाबी सुंडी का प्रकोप होने पर, क्लोरपाइरीफॉस 20 ईसी (1250 मिली) या थियोडीकार्ब 75 डब्ल्यूपी (560.1000 ग्राम) या क्विनोलफॉस 20 एसएफ (1250.2250 मिली), प्रोफेनोफॉस 50 ईसी (1250.2000 मिली), इंडोक्साकार्ब 14.5 ईसी (500 मिली) या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी (250 ग्राम) प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें।

चित्तीदार सूंडी व अमेरिकन सुंडी का नियंत्रण.

देशी कपास व अमेरिकन कपास में चित्तीदार सूंडी व अमेरिकन सुंडी के नियंत्रण के लिए स्पिनोसेड 45 एससी (150 मिण्ली) या फलुबेंडियामाइड 480 एससी (अमेरिकन सुंडी) (100 मिली), इंडोक्साकार्ब 14.5 ईसी (500 मिली), स्पिनटोराम 11.7 एससी. (425 मि.ली), क्लोरेट्रानिलिप्रोल 18.5 एस.सी. (अमेरिकन सुंडी) (150 मिली) प्रति हेक्टेयर छिड़काव कर सकते है।

सिंचाई और खाद कब डालें

किसान नरमा की किस्म आरएसटी में पहली सिंचाई बुआई के 50 दिन बाद भी कर सकते हैं। इसके अलावा अन्य किस्मों में पहली सिंचाई 30 से 35 दिनों बाद करनी चाहिए। अगर किसान नाइट्रोजन की पहली मात्रा बुआई के समय नहीं दे सके तो यह प्रथम सिंचाई के समय भाखड़ा क्षेत्र में 12.5 किलो नाइट्रोजन प्रति बीघा एवं गंगानगर क्षेत्र में 10 किलो नाइट्रोजन प्रति बीघा दी जानी चाहिए। अच्छी पैदावार के लिए किसान अमेरिकन कपास नरमा की इन किस्मों की बुआई करें .

बीमार अवस्था में मिले तेंदूए की मौत कडियाकुंड से ईलाज के लिए लाया था अमला

हलधर किसान (वन)। मध्य प्रदेश के खरगोन जिले के बड़वाह वन परिक्षेत्र में एक बीमार तेंदुए की मौत हो गई है। यह तेंदुआ बीते दिनों कड़ियाकुंड के जंगलों में बीमार अवस्था में वन विभाग के अमले को मिला था। गश्ती दल ने तेंदुए को कुछ देर तक ऑब्जर्व किया तो इसमें किसी तरह का कोई मूवमेंट नहीं दिख रहा था। जिसके बाद वन अमला उसे रेस्क्यू कर इलाज के लिए रेंज ऑफिस तक लाया, जहां नर्सरी में उपचार के दौरान सुबह उसकी मौत हो गई। चिकित्सक और वन अधिकारियों ने तेंदुए की मौत संक्रमण से होने की आशंका जताई है। तेंदुए की उम्र करीब डेढ़ साल थी। ऐसे में उसके परिवार की मूवमेंट पर नजर रखने के लिए विभाग ने घटनास्थल के आसपास के 5 किमी एरिए में कैमरे लगाए हैं। वन अधिकारियों ने बताया कि गश्ती दल को यह तेंदुआ 26 अप्रैल को भादलीपूरा रेंज बड़वाह में मिला था। जिसके बद शाम को रेस्क्यू कर उसे यहां लाया गया था। डॉक्टरों ने उसका इलाज शुरू किया। लेकिन, रविवार सुबह उसकी मौत हो गई।

-प्रारंभिक जांच के अनुसार डॉक्टरों ने बताया कि डिहाइड्रेशन की वजह से तेंदुए की ऐसी हालत हुई है। सुबह करीब 6 बजे उसकी मौत हो गई, प्रारंभिक जांच में लग रहा है कि तेंदुआ किसी बीमारी से संक्रमित था, जिसके चलते उसकी मौत हुई है। तेंदुए का पीएम करवा लिया है और उसका सेंपल भी जांच के लिए भेजा गया है। रिपोर्ट आने के बाद ही उसकी मौत का कारण स्पष्ट हो सकेगा।

गर्मी में कर लेंगे यह काम तो अरहर फसल पर नही होगा घातक कीटों का प्रकोप

हलधर किसान। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के कृषि विज्ञान केंद्र के अनुसार खरीफ सीजन में अरहर की बुवाई के लिए जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के दूसरे सप्ताह तक का समय सही रहता है। किसान खेत तैयार करके बुवाई कर देते हैं, लेकिन, फसल की कीटों से सुरक्षा बहुत जरूरी है। कृषि विज्ञान केंद्र की गाइडलाइन के अनुसार किसान खासकर दो कीटों हेलिकोवर्पा आर्मीजेरा यानी फली भेदक और फली मक्खी यानी मेलानाग्रोमाइजा आब्टूसा कीट से फसल को बचाना जरूरी है।अरहर फसल को सबसे ज्यादा नुकसान हेलिकोवर्पा आर्मीजेरा कीट पहुंचाता है। इसे फली भेदक कीट के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि यह फली को काटकर खा जाता है या उसे बर्बाद कर देता है। यह कीट फसल को 25 से 30 प्रतिशत तक नुकसान पहुंचा देता है। मादा कीट पतंगा अपने अंडे अरहर की फलियों, फूलों तथा कोमल फलियों पर फैला देती है। अंडों से 2 से 3 दिनों में गिड़ारें निकलती हैं, जो 4.5 दिनों के दौरान फलियों और उसके अंदर के दानों को खा जाती है।

कीटनाशक छिड़काव और बचाव का तरीका

अरहर की फसल को कीट से बचाने के लिए खेत की गर्मी में गहरी जुताई करने चाहिए, इससे प्यूपा बाहर आ जाते हैं और तेज धूप से नष्ट हो जाते हैं। मिश्रित फसल के रूप में मक्का, ज्वार उगाने से कीट का प्रकोप कम हो जाता है। मक्का, ज्वार की कटाई के बाद तने को खेत में छोड़ने से पक्षी कीट को खा जाते हैं।

उपचार का तरीका-

एक किलोग्राम निबोली बीज पाउडर को 20 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर 10 दिन के अन्तराल पर 2 से 3 छिड़काव फलियां बनते समय करना चाहिए।

लेबड़ सायलोथ्रिन 40 ग्राम प्रति हेक्टयर, इण्डोस्फान 0.07 प्रतिशतए एफेनवलरेट 0.01 प्रतिशत, साइपरमेथिरन 0.01 प्रतिशत क्लोरपाइरीफास 0.05 प्रतिशत कीटनाश दवा में से किसी एक को तीन बार छिड़काव करना चाहिए। पहला छिड़काव फूल शुरू होते ही और दूसरा छिड़काव 50 प्रतिशत फूल बनने पर और तीसरा छिड़काव 50 प्रतिशत फली बनने की अवस्था में करना चाहिए।

बिना लायसेंस बाहरी राज्यों से आकर बीज बेचने वालों पर होगी कानूनी कार्रवाई

हलधर किसान

कांतिलाल कर्मा. खरगोन।

आगामी खरीफसीजन 2024 के लिए मध्यप्रदेश के खरगोन जिले का जिला प्रशासन, कृषि विभाग एवं उद्यानिकी विभाग अभी से किसानों की मांग अनुरूप बीज उपलब्ध कराने की तैयारियों में जुट गया है। कलेक्टर कार्यालय में अपर कलेक्टर ने कृषि उप संचालक की मौजूदगी में खाद. बीज विक्रेताओं की समीक्षा बैठक लेकर उन्हें मांग अनुसार समय पर खाद. बीज उपलब्ध कराने के निर्देश दिए है।

वहीं उद्यानिकी विभाग कार्यालय में भी उप संचालक केके गिरवाल ने बीज कंपनी, प्रबंधकों, प्रतिनिधियों को तलब किया। इन बैठकों में सख्त हिदायत भी दी गई है कि बीज की गुणवत्ता का ध्यान रखा जाए। समय पर मांग अनुसार बाजार में बीज उपलब्ध कराएं। कृषि विभाग से मिली जानकारी अनुसार जिले में करीब 600 डिस्ट्रीब्यूटर है और करीब 63 कंपनियां इन्हें बीज उपलब्ध कराती है।

उद्यानिकी विभाग उप संचालक केके गिरवाल ने खंडवा रोड स्थित कार्यालय में जिले में जो कंपनी सब्जी, मसाला बीज का व्यापार कर रही है, उनके विक्रेताओं, प्रतिनिधियों की बैठक ली। इसमें आगामी सीजन में उनके पास कितना बीज उपलब्ध है, डिस्ट्रीब्यूटरों को कितना बीज उपलब्ध कराया है। इसकी जानकारी मांगी गई है। श्री गिरवाल ने बताया जिले में लायसेंसधारी डिस्ट्रीब्यूटर 2500 के करीब है और 80 कंपनियां इन्हें बीज उपलब्ध कराती है। अन्य राज्यों से जिले में बिना लायसेंस का व्यापार करने कि शिकायत पर सीड इंस्पेक्टरों के माध्यम से कार्रवाई की जाती है।

कृषि विभाग ने तय किया अनुमानित लक्ष्य

वर्ष 2024 खरीफ सीजन में बोई जाने वाली फसलों के क्षैत्राच्दान के लिए कृषि कल्याण तथा कृषि विकास विभाग ने लक्ष्य निर्धारित किया है। उप संचालक एमएल चौहान ने बताया कि जिले में गत वर्ष याने 2023 में 4 लाख 16 हजार 570 हेक्टेयर में फसल बोई गई थी, इसके मुकाबले इस वर्ष 4 लाख 66 हजार 79 हेक्टेयर में बुआई का लक्ष्य रखा गया है। इसी के अनुसार बीज कंपनियों को समय पर बीज आपूर्ति के निर्देश दिए गए है।

फसल	गत वर्ष	2023 का लक्ष्य
धान	60	55
मक्का	46677	48000
ज्वार	476	500
उड़द	35	200
मूंग	295	450
अरहर	2222	2500
मूंगफली	538	550
सोयाबीन	97000	95000
अन्य तिलहन	2746	2800
कपास	100313	98379

खरीफ सीजन के दौरान उद्यानिकी बीज कंपनी, विक्रेताओं से चर्चा कर समय पर मांग अनुसार बीज उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। उन्हें समयावधि में बीज अनुज्ञा नवीनीकरण कराने, कृषकों को मानक स्तर के बीज उपलब्ध कराने तथा जिले में विक्रय किए जा रहे उद्यानिकी फसलों के बीजों का ऑनलाइन स्टॉक विभाग को उपलब्ध कराने के निर्देश भी दिए। इस दौरान कंपनी से जुड़े कर्मचारियों ने लायसेंस लेने की प्रक्रिया को लेकर सवाल भी किए, समस्याएं भी बताई, जिसका उप संचालक ने समाधान भी किया। श्री गिरवाल ने बताया कि जिले में लायसेंसधारी डिस्ट्रीब्यूरों की संख्या 600 है और 80 कंपनियां बीज उपलब्ध कराने का काम कर रही है। बैठक के दौरान जिले में गत वर्ष 2023-24 में विक्रय किए गए उद्यानिकी बीजों की फसलवार, किस्मवार जानकारी भी मांगी गई है।

2 हेक्टेयर अधिक क्षेत्र में कृषि और उद्यानिकी फसल बुआई का लक्ष्य

कुल अनाज फसलें गत वर्ष 47298 बुआई की गई थी, जबकि 2024 में 48650 लक्ष्य रखा गया है। इसी तरह दलहन फसल गत वर्ष 2552 जबकि 2024 में 3150 हेक्टेयर लक्ष्य रखा गया है। इसी तरह तिलहन फसलें गत वर्ष 100313 हेक्टेयर में बोई गई थी इस वर्ष 98379 हेक्टेयर का लक्ष्य रखा गया है। कृषि फसलें गत वर्ष 370243 हेक्टेयर में कोई गई थी, जबकि इस वर्ष 37019 हेक्टेयर का लक्ष्य रख गया है, वहीं उद्यान फसलें गत वर्ष 46327 हेक्टेयर में बोई गई थी, इस वर्ष इन फसलों का लक्ष्य 46500 हेक्टेयर रखा गया है। कृषि और उद्यानिकी दोनों फसलें गत वर्ष 416570 हेक्टेयर में बोई गई थी, जिसे देखते हुए इस वर्ष 416679 हेक्टेयर बुआई लक्ष्य रखा गया है। जो गत वर्ष के मुकाबले 2 हेक्टेयर अधिक है।

9 लाख कपास पैकेट की उपलब्ध कराने के दिए है निर्देश

-आगामी खरीफ सीजन को लेकर कृषि विभाग ने अनुमानित लक्ष्य तय किया है, जिसमें कपास का लक्ष्य 2 लाख 20 हजार हेक्टेयर रखा है,जो गत वर्ष के मुकाबले 80 हेक्टेयर कम है। लक्ष्य को देखते हुए जिले में 9 लाख पैकेट कपास बीज की मांग को पूरा करने के लिए कंपनियों को निर्देशित किया है। बाहरी राज्यों से जिले में आने वाली बगैर रजिस्टर्ड कंपनियों के बीज बिक्री के मामले में विभाग किसानो के साथ छल या धोखाधड़ी करने वालों के खिलाफ सख्त है, बाहरी राज्यों से आकर बिना रजिस्टर्ड कंपनी के बीज बिक्री होने की जानकारी मिलने पर छापामार कार्रवाई करेंगे, एफआईआर भी होगी।

एमएल चौहान, उप संचालक कृषि

पिताजी के व्यापार और कंपनी को ऊंचाई पर ले जाना मेरी प्रतिबद्धता: श्री वैभव जैन

संकल्प सप्ताह के रुप में मनाई जा रही ईगल सीड्स संस्थापक स्व. जैन की जयंती

हलधर किसान। ईगल जैसी तीव्र नजर के साथ ईगल सीड्स के जनक स्व. राजेन्द्र जैन ने कंपनी की नींव रखी थी, जो आज कृषि समुदाय में बुलंदियों पर है एवं किसानो को खुशहाली के बीज दे रही है। पिछले 3 दशकों से भारत के किसानो को समृद्ध बनाने के लिए प्रयासरत ईगल सीड्स अपने संस्थापक स्व. राजेन्द्र जैन को उनके 68वें जन्मदिवस पर नमन कर रहा है।

ईगल सीड्स एंड बायोटेक लिमिटेड, संस्थापक स्व. जैन का 68वां जयंती समारोह संकल्प सप्ताह के रुप में मना रही है। मध्यप्रदेश के रतलाम जिले के एक छोटे से कस्बे आलोट में जन्में स्व. राजेंद्र कुमार जैन की जयंती को संस्था द्वारा 1 से 7 मई तक संकल्प सप्ताह के रूप में सामाजिक गतिविधियों के साथ मनाया जा रहा है। इसी शुरुआत ग्राम क्षिप्रा जिला देवास में स्थित प्रसंस्करण संयंत्र के सभागार से की गई। कंपनी के कर्मचारियों, स्व. जैन से जुड़े हुए प्रबुद्धगण, कृषि क्षेत्र के प्रमुख अख़बार, पत्रिकाओं से जुड़े पत्रकार उपस्थित रहे। इस दौरान एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें स्व. जैन की धर्मपत्नीश्रीमति सुमंगला जैन, उनके सुपुत्र और कंपनी के प्रबंध निदेशक वैभव जैन, लीड वाणिज्यिक और संचालन मनीष जैनए मानव संसाधन विभाग की प्रमुख श्रीमती त्रिशला जैन के अलावा कंपनी के सभी विभागों के प्रमुख शामिल हुए। कार्यक्रम में 10 मिनट के एक विडियो के माध्यम से श्री जैन के अनमोल पहलुओं को जिसमें ईगल सीड्स के विशालकाय निर्माण, उनके संघर्ष और चुनौतियों को दिखाया गया, जिसे देख उपस्थित लोग भावुक नजर आए। जनरल मैनेजर (मार्केटिंग एंड प्रॉडक्ट डेवलपमेंट) डॉ. अशोक कुमार गुप्ता ने बताया की 1001 वितरको के यहां पर विक्रेता एवं किसान भाइयों तक सोयाबीन के उच्च श्रेणी के बीज कंपनी ने पहुंचाए है, इसके अलावा विभिन्न क्षेत्रों में किसानों के बीच संगोष्ठी का आयोजन किया और 20,000 किसानों को सफल खेती के प्रति उनकी सोच और किसानों के प्रति उनका सम्पर्ण भाव के बारे में बताया। कंपनी प्रतिनिधियों ने ब्लड डोनेशन कैंप भी लगाएं। डॉ. गुप्ता के अनुसार इस वर्ष भी बड़े पैमाने पर अनेको गतिविधियों का आयोजन किया जायेगा। कृषि पत्रकारिता के क्षेत्र से जुड़े देवराज चौधरी, लक्ष्मीनारायण पटेरिया जैसे प्रख्यात पत्रकारों ने भी श्री जैन साहब के साथ अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि मैनेजिंग डायरेक्टर वैभव जैन में भी स्व. जैन की प्रतिकृति का भाव दिखता है। वैभव जैन ने बताया की जिस प्रकार बीज जमीन के अंदर से बाहर आने के पहले नकारात्मक प्रवाह को सहन करता हैए उसका अहसास किसी को नहीं होता, सबको केवल एक सुन्दर पौध ही दिखाई देती है। ऐसे ही नकारात्मक प्रवाह वाली बहुत सी बाते जो चुनौतियों के रूप में एक संस्थान को खड़ा करने की प्रारंभिक अवस्था में होती है। श्री वैभव जैन ने अपनी पिताजी द्वारा स्थापित व्यापार और कंपनी और ऊंचाई पर ले जाने की प्रतिबद्धता दोहराई। स्व. राजेंद्र जैन का बीजारोपण, जैसा बोओगे, वैसा काटोगे को चरितार्थ कर रहा हैऔर आज ईगल सीड्स एंड बायोटेक लिमिटेड, हिंदुस्तान की सबसे बड़ी सोयाबीन बीज़ प्रदाता कंपनी है।

बिना पीसी के कीटनाशक व बीज का बढ़ रहा ऑनलाईन कारोबार

जागरुक कृषि आदान विक्रेता संघ ने जताई आपत्ति

हलधर किसान इंदौर (श्रीकृष्ण दुबे)। मप्र के इंदौर में जागरुक कृषि आदान व्रिकेता संघ के बैनर तले जिले में बिना पीसी के कीटनाशक व बीज की सप्लाय पर आपत्ति दर्ज कराई गई है। संस्था अध्यक्ष श्रीकृष्ण दुबे के नेतृत्व में सोमवार दोपहर कृषि कल्याण तथा कृषि विकास विभाग पहुंचे पदाधिकारियों ने उप संचालक को सौंपे ज्ञापन में बताया कि ऑनलाईन कंपनियां बिना पीसी के कीटनाशक व बीज का विक्रय कर रही है, देखने में आ रहा है कि कानूनी प्रक्रिया की जानकारी के अभाव में व्यापारियों द्वारा बिलिंग करवाई जा रही है, जिससे आजकल ऑनलाईन एग्री उत्पाद का व्यापार जोर पकड़ रहा है। इसमें कई कंपनियां जो बगैर पीसी के व्यापारी बुंधओं को कीटनाशक व बीज सप्लाई दे रहे है। इसलिए संघ मांग करताहै कि सभी कीटनाशक निरीक्षक को निर्देश दिए जाए कि दुकानों पर नियमित चेकिंग के दौरान ऑनलाईन कंपनियों के बिलिंग की जांच करें। यदि कंपनियों द्वारा पीसी जारी नहीं किया गया है तो संबंधित के विरुद्ध वैधानिक कार्रवाई करें, ताकि पीसी जारी नहीं किया गया है तो संबंधित के विरुद्ध वैधानिक कार्रवाई कि जाए ताकी आनलाईन विक्रय के द्वारा जो भी जालसाजी व्यापारियों एवं किसानों के साथ होने की संभावना है उसे रोका जा सके। इसके अलावा सब्जी बीजों के लायसेंय में प्रिसिंपल सर्टिफिकेट विसंगतियों पर भी ध्यान आकृष्ट कराया है। अध्यक्ष दुबे एवं सचिव जितेंद्र जैन ने बताया कि आरटीआई से मिली जानकारीअनुसार बीज लायसेंस में किसी प्रकार के प्रिंसिपल सर्टिफिकेट जुड़वाने का कोई प्रावधान नही है। इसलिए विभाग उक्त जानकारी का पालन करवाना सुनिश्चित करें। इस दौरान संघ के पदाधिकारी मौजूद थे।

ग्लोबल वार्मिंग का खतरा......

कहीं हीटवेव तो कहीं आ रही बाढ़, नहीं संभले तो 2050 तक 30 सालों के मुकाबले बढ़ सकता है, 1 से 2.5 डिग्री सेल्सियस तक तापमान

·/U»Ł, ,¥IU Œ,, ª´ ,U ¿ª»Ł S ¸ ⁄Ł C Ł

हलधर किसान

नई दिल्ली।
पूरी दुनिया ग्लोबल वॉर्मिंग की चपेट में आ चुकी है, जिसके चलते लगातार मौसम परिवर्तन और बढ़ती गर्मी का सितम जारी है। ऐसे में क्या कभी सोचा है कि इस बीच कुछ जगहों पर भयंकर बाढ़, सर्दी कैसे पड़ रही है।

वर्ष 2023 को पिछले 174 सालों का सबसे गर्म साल घोषित किए जाने के बाद अब भारतीय मौसम विभाग ने भी चालू वर्ष याने 2024 की ग्रीष्म ऋतु को सामान्य से अधिक गर्म होने की चेतावनी दे दी है।देश के अधिकांश हिस्सों में मासिक न्यूनतम तापमान भी सामान्य से अधिक रहने की संभावना है। विभाग द्वारा मैदानी इलाकों में हीट वेव यानी कि लू चलने की चेतावनी दी गई है। इसके साथ ही उत्तर पश्चिम भारत के अधिकांश हिस्सों और मध्य भारत के कई हिस्सों, उत्तरी प्रायद्वीपीय भारत, पूर्व और उत्तर पूर्व के कुछ हिस्सों में सामान्य से अधिक वर्षा होने का पूर्वानुमान मौसम विभाग ने जारी किया हुआ है।

नास्त्रेदमस की भविष्यवाणी भी चर्चाओं में

नास्त्रेदमस की सुनामी वाली भविष्यवाणी को लेकर दावा किया जा रहा है कि भयानक बाढ़ दुनिया के कुछ हिस्सों को प्रभावित करेगी, जिसके बाद भयानक अकाल आएगा। पृथ्वी और अधिक सूख जाएगी और कीटों का आतंक फैल जाएगा, जिससे अकाल की संभावना है। इसके अलावा नास्त्रेदमस की जो तीसरी भविष्यवाणी है, उसके मुताबिक 2024 में एक अंतरराष्ट्रीय संघर्ष छिड़ सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि नास्त्रेदमस का ये इशारा एशिया में बढ़ते संघर्ष की ओर है।

नास्त्रेदमस के अनुसार आकाश से कोई धूमकेतु धरती पर गिर सकता है, जिससे कि भारी तबाही होगी। वहीं, आकाश से कुछ और वजहों जैसे किसी और ग्रह के लोगों के हमले की आशंका से जुड़ी भविष्यवाणी भी की गई है।

सेंटर फॉर स्टडी ऑफ साइंसए टेक्नोलॉजी और पॉलिसी द्वारा साल 2022 में जारी 'क्लाइमेट एटलस ऑफ इंडिया' रिपोर्ट कहती है कि भारत के 28 राज्यों के 723 ज़िले आगाह कर रहे हैं कि आगे खतरा बढ़ रहा है। सीएसटीईपी के मुताबिक, 1990 से 2019 के बीच 30 सालों के दौरान देश के तकरीबन 70 प्रतिशत जिलों में लगभग 0.9 डिग्री सेल्सियस तापमान की बढ़त हुई है। जिन राज्यों में सबसे ज्यादा गर्मी की मार पड़ी है उनमें पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, गुजरात और उत्तर पूर्वी राज्य शामिल हैं।

खैर, अब रिपोर्ट को रखते हैं किनारे और समझते हैं कि ये गर्मी बढ़ी कैसे?

नई टाउनशिप महानगरों में नई विकसित हुई टाउनशिप वाले लोग अपने घरों को अब क्लाइमेट के लिहाज से समझें। आपकी छत यानि सीलिंग की ऊंचाई ज्यादा नहीं होगी, दीवारें इंसुलेटेड नहीं होंगी यानि ऐसी होगीं जिनसे गर्मी आसानी से अंदर आ सकती है। खिडक़ी दरवाजें कांच के होंगे, जो घर को इतना तपा कर रख देते हैं कि बिना एयरकंडीशन के काम ही नहीं चलेगा। घर को ठंडा रखने के लिए आपने एसी चलाया तो घर तो ठंडा हो गया, लेकिन आपके इस एसी ने बाहर के तापमान में इजाफा कर दिया। इसे थोड़े बड़े पैमाने पर समझना हो तो मान लीजिए कि आप किसी अपार्टमेंट में रहते हैं जहां 24.24 फ्लोर वाले चार टावर हैं। मान लीजिए कि एक फ्लोर पर 6 फ्लैट हैं, उन 6 फ्लैटों में से प्रत्येक घर में दो.दो एसी हैं, तो एक बिल्डिंग में कुल कितने एसी हैं। हिसाब देख लीजिए, हर गैजेट बढ़ाता है तापमान।

हर सुविधा बढ़ा रही दुविधा

बात सिर्फ एसी की नहीं है, आपकी हर सुविधा जयवायु की दुविधा बढ़ा रही है। सुबह हुई आपने पानी की मोटर चलाई, गर्म पानी से नहाने का शौक या जरूरत है तो गीजर चलाया। रसोई में गए गैस जलाई, माइक्रोवेव, मिक्सी का उपयोग किया, फिर नाश्ता करके घर से निकले, अपनी कार में बैठकर दफ्तर पहुंच गए और दफ्तर में भी एयर कंडिशनर चालू है। अब ये सब जो आपने दिनभर किया आपको जानकर हैरानी होगी। इस धरती के तापमान को बढ़ाने में आपका भी पूरा.पूरा हाथ है। आपका एसी, फ्रिज, माइक्रोवेव, ओवन, गाड़ी, गीज़र ये सब धरती का तापमान बढ़ा रहे हैं।

पर्यावरणविदों का कहना है कि गर्मी बढ़ने के दो कारण हैं, एक ग्लोबल वार्मिंग और दूसरा मौजूदा शहरीकरण।

जिस तरह हम हीटवेव आइलैंड तैयार कर रहे हैं। गर्मी का सीधा.सीधा संबध एनर्जी से है, चाहे आपके घर में एसी, रेफ्रिजरेटर, माइक्रोवेव, ओवन चलें या गाड़ियों में ईंधन का इस्तेमाल हो। ये तीन मेजर ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन करते हैं जो तापमान भी बढ़ाती हैं और सेहत के लिए भी खतरनाक हैं। वातावरण में मौजूद खतरनाक गैसें कार्बन डाईऑक्साइड. हवा में अगर इसके पार्टिकल्स 1000 पर मिलियन से ज्यादा हो तो आपकी सेहत के लिए हानिकारक है। हवा में इसकी मात्रा ज़्यादा बढ़ने पर यह सिरदर्द, चक्कर आना और बेहोशी का कारण बन सकती है। किसी बंद जगह पर अगर कार्बन डाईऑक्साइड ज्यादा हो तो दम घुटने से मौत भी हो जाती है।

क्यों बढ़ रहा है पृथ्वी का तापमान

अगर सच में ये जानना है कि धरती का तापमान क्यों बढ़ता जा रहा है तो अपने पुरखों के कहे को ही याद रखना होगा, जो प्रकृति को पूजते भी थे और उसका सम्मान भी करते थे, पर्यावरण के साथ कोइ छेड़छाड़ नहीं करते थे। आसान भाषा में समझें तो सूर्य की किरणों से जितनी ऊर्जा यहां आती है उसका 50 फीसदी यानि आधा धरती सोख लेती है, 23 फीसदी वातावरण में घुल जाता है, और बाक़ी वापस अंतरिक्ष की तरफ चला जाता है। प्रकृति ये सुनिश्चित करती है कि धरती से जाने और सूर्य से आने वाली एनर्जी में संतुलन हो जिससे जलवायु और वातावरण का संतुलन बना रहे। लेकिन ये ग्रीनहाउस गैस जितनी तादाद में रिलीज हो रही हैं वो ऊर्जा को सोख लेती है और वापस अंतरिक्ष में जाने नहीं देतीं।

यानि सूरज से आई ऊर्जा कुछ धरती सोख लेती है कुछ वातावरण में रहती है। वैसे ही धरती से जो एनर्जी निकलती है वो अंतरिक्ष की तरफ जाती है और इस तरह प्रकृति का बैलेंस बना रहता है। बहुत आसान भाषा में समझें तो जब कार्बन डाईऑक्साइड पृथ्वी से निकलती है, तो हवा से ये आसमान में अंतरिक्ष की ओर बढ़ती है। लेकिन इन तमाम गैसों में गर्मी को लंबे वक्त तक पकड़े रहने की क्षमता होती है इसलिए लगातार इनका उत्पादन वातावरण में गर्मी को बढ़ाए रखता है। हालांकि इसमें कोरोना काल में लगे लॉकडाउन के समय कुछ कमी देखी गई थी।

भविष्य में कितना बढ़ सकता है

तापमान क्लाइमेट एटलस ऑफ इंडिया रिपोर्ट कहती है कि साल 2021 से 2050 के बीच भारत के अधिकांश जिलों का तापमान पिछले 30 सालों के मुकाबले 1 से 2.5 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है। पर्यावरणविद तापमान बढाने वाले कारणों को छह हिस्सों में बांटते हैं जो ग्रीन हाउस गैस को रिलीज करते हैं। संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक इंसान जितना मीथेन गैस का उत्सर्जन करते हैं, उसके 55 फीसदी हिस्से के लिए तेल, गैस, कोयला और कूड़ाघर जिम्मेदार हैं। इसके अलावा 32 प्रतिशत मीथेन गैस के लिए गाय, भेड़ और अन्य मवेशी जानवर ज़िम्मेदार हैं।

अब संभलना है ज़रूरी

गर्मी और तापमान को पिछले कुछ सालों में दुनिया के कई बड़े देशों के साथ भारत ने भी गंभीरता से लिया है। पिछ्ला साल सबसे गर्म साल रहा और जनवरी से लेकर मार्च तक सबसे गर्म महीने रिकॉर्ड किए गए। यूएन पर्यावरण कार्यक्रम की ताजा रिपोर्ट कहती है कि अगर ग्रीनहाउस गैस के उत्सर्जन में कमी करने के सामूहिक प्रयास ना हुए तो इस सदी के अंत तक पूरे विश्व के तापमान में 2.7 डिग्री की बढ़ोतरी हो जाएगी। स्थिति इतनी भयावह है कि तापमान की बढ़त को पूरी तरह रोका नहीं जा सकता, लेकिन इसे अगर 1.5 डिग्री तक भी रोकना है तो साल 2030 तक पूरे विश्व को ग्रीनहाउस गैस के उत्सर्जन को कंट्रोल करना होगा।

जलवायु जोखिम का आंकलन केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय की ओर से जारी राष्ट्रीय जलवायु जोखिम आकलन, यानि क्लाइमेट वलनरेबिलिटी एसेसमेंट रिपोर्ट में क्लाइमेंट चेंज से सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाले राज्यों और जिलों की लिस्ट बनाई गई है।

ये एक अच्छी पहल है कि सरकार ने अब इस खतरे को गंभीरता से लेना शुरू किया है, लेकिन ये काफी नहीं है।

हीट इंडेक्स के रंग और तापमान पर असर

अगर तापमान 45 डिग्री से आगे बढ़ जाए तो हम कहते हैं कि हीटवेव है, यानि सामान्य तापमान से चार पांच डिग्री ज्यादा हो तब, जबकि हमारे शरीर पर तापमान और ह्यूमिडिटी दोनों का असर होता है। हीटस्ट्रोक, हीट और ह्यूमिडिटी के कॉम्बिनेशन से होता है, इसे वेट बल्ब टेंपरेचर से आंका जाता है। इसलिए हमने मांग की कि हीटवेव की परिभाषा हीट और ह्यूमिडिटी यानि वेट बल्ब टेंपरेचर पर आंकिए, वेट बल्ब टेंपरेचर अगर 30.32 डिग्री से भी ज्यादा है तो बहुत घातक माना जाता है, तापमान अगर 40 डिग्री है और ह्यूमिडिटी नहीं है तो लोग सह लेंगे, जबकि अगर तापमान 35 डिग्री है और ह्यूमिडिटी 80 फीसदी है तो लोग सह नहीं पाएंगे।

क्या उपाय हो सकता है?

कुल मिलाकर गर्मी आग बरसा रही है, विश्व स्तर पर संस्थाएं साथ मिलकर आगे बढ़कर हल निकालने की बात कर रही हैं। संस्थाओं के साथ समाज के हर एक वर्ग को जिम्मेदारी समझनी निभानी होगी। ग्रीन एनर्जी पर शिफ्ट होना होगा। सर्टिफाइड ग्रीनहाउस बिल्डिंग्स बनानी होंगी जो इंसुलेटेड हों, बिजली की खपत कम हो, इलेक्ट्रिकल वाहनों पर शिफ्ट होना होगा। 5 स्टार यानि एनर्जी सेवर इलेक्ट्रिक उपकरण लेने होंगे, सौर ऊर्जा को बढ़ावा देना होगा, बिजली पानी व्यर्थ करने से बचना होगा।

एजेंसी के लिए संपर्क करें

प्रतिष्ठित मासिक समाचार पत्र हलधर किसान। अखबार की प्रतियां नियमित रुप से प्राप्त करने के लिए वार्षिक सदस्यता लेने, एजेंसी/विज्ञापन प्रकाशन के लिए हमारे वाट्सअप नंबर (88174 02860) या हमारे प्रधान कार्यालय 598, वेगॉस मॉल, कार्पोरेट बिल्डिंग, एस.14 द्वारका साउथ वेस्ट, नई दिल्ली 110075 या मप्र में 762, बीज भंडार भवन, न्यू नूतन नगर खरगोन में संपर्क कर सकते है। आपके लेख, शोधकार्य को भी प्रमुखता से प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे।

पर्यावरण प्रेमी दंपत्ति ने घर की छत को बना दिया गार्डन गर्मी में भी लहलहा रहे फलों के साथ औषधिय पौधे

कांतिलाल कर्मा खरगोन मप्र।
हर व्यक्ति का कुछ ना कुछ शौक जरूर होता है। शौक को पूरा करने के लिए मेहनत भी करते हैं। इसी तरह शहर के नूतन नगर निवासी उपाध्याय दंपत्ति को बागवानी का शौक है। इस शौक के चलते इन्होंने पूरे छत को हीं गार्डन बना रखा है। छत पर गमलों में हीं फल, फूल औषधीय पौधे सहित सब्जी लगा रखी है जो न केवल छत की सुंदरता बढ़ा रहे है, बल्कि इन्हें ताजे, फल. सब्जियां भी मुहैया हो रही है।

सेवानिवृत्त शिक्षक गिरीश उपाध्याय एवं उनकी पत्नि श्रीमती रजनी उपाध्याय ने बताया कि छत पर अलग-अलग वैरायटी के करीब 150 से अधिक पौधे है। छत पर लगे बागवानी का पूरा ख्याल रखते हैं। गर्मी के मौसम में शाम और सुबह दोनों समय पानी डालना पड़ता है। वहीं अच्छी उपज के लिए जैविक खाद का प्रयोग करते हैं।

श्रीमति उपाध्याय ने बताया कि वह बचपन से पर्यावरण को तवज्जो देती है, यही कारण है कि छत पर बागवानी के साथ ही पक्षियों के लिए 12 महिने सकोरे में दाना. पानी रखा जाता है, छत सहित घर के बालकनी में रखे पौधों पर पंछियों ने घोंसला बना रखा है। उपाध्याय दंपत्ति के घर का नजारा देखें तो हर जगह आपको पौधे नजर आएंगे। श्रीमति उपाध्याय ने बताया कि 5 से 10 तरह के अच्छी क्वालिटी का फूल जिसमें अलग. अलग रंगों के गुलाब, कमल चंपा, अडेनियम के साथ ही सब्जियों में तुरई, पालक, टमाटर लगा हुआ है। उन्होंने बताया कि बागवानी पूरी तरह से जैविक तरीके से करते हैं। बागवानी से प्राप्त होने वाले फल और फूल सहित औषधीय पौधे घर पर ही उपयोग करते हैं। उल्लेखनीय है कि श्रीमति उपाध्याय प्रकृति प्रेमी होने के साथ ही सामाजिक एवं रचनात्मक गतिविधियों में भी रूचि रखती है, हाल में दुरदर्शन पर ये है नारी शक्ति विषय पर एक खास मुलाकात कार्यकम में प्रस्तुत हुआ था, जिसे काफी सराहा जा रहा है।

ग्लोबल वार्मिंग से बचने का सुगम तरीका

उपाध्याय दंपत्ति ने छत पर खेती कर नवाचारी होने का प्रमाण दिया है। उन्होंने इसे ग्लोबल वार्मिंग से बचने का सुगम तरीका भी बताया है। श्री उपाध्याय ने कहा कि इससे ग्लोबल वार्मिंग के दुष्परिणाम के फलस्वरूप जलवायु परिवर्तन के इस युग में खास कर कृषि एवं पर्यावरण के क्षेत्र में सर्वाधिक नुकसान हो रहा है। इस नुकसान से बचने एवं घरेलु महिलाओं और बेरोजगार नवयुवकों को रोजगार मुहैया कराने की दिशा में छत पर फलो साग- सब्जियों और औषधीय पौधों की खेती एक नई संभावनाओं से भरा क्षेत्र हैं। इससे मनुष्य के व्यक्तिगत स्वास्थ्य में सुधार, आर्थिक लाभ तथा पर्यावरण में सुधार के क्षेत्र में महती भूमिका निभाई जा सकती है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधन खासकर भूमि एवं जल की उपलब्धता सीमित है। साथ ही जमीन, पानी और अन्य कृषि जन्य संसाधनों की उपलब्धता से जुड़े पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकी के प्रभाव के फलस्वरूप आधुनिक कृषि प्रणालियों को और अधिक कारगार बनाने की जरूरत है, ताकि बढ़ती जनसंख्या की खाद्यान्न की मांग की पूर्ति की जा सके। सब्जी फल-फूल सब्जी का उत्पादन करने से आम शहरीजनों को महंगाई और केमिकलयुक्त सब्जियों से निजात मिल सकती है एवं परिवार की आवश्यकता के अनुरूप उत्पादन किया जा सकता है। छत पर खेती करना सामान्य खेती करने से अलग है।

स्वामी विवेक जैन, प्रकाशक विवेक जैन, मुद्रक कैलाश महाजन द्वारा गोपाल प्रिंटिंग प्रेस, तिलक पथ, खरगोन से मुद्रित एवं 26/1, विवेकानंद कॉलोनी, वार्ड नंबर 5, खरगोन से प्रकाशित, संपादक विवेक जैन।.RNI No. MPHIN/2022/85285, मोबा. नं.98262 25025, 94254 89337 (समस्त प्रकार के विवादों के लिए न्याय क्षेत्र खरगोन रहेगा)।